Sub - Philosophy B.A. III (Hon's) Paper - V

प्रश्न - ईश्वर के अस्तित्व में प्रमाण से ज्यादा श्रद्धा का महत्व है समीक्षा करें ?

या

ईश्वर की सत्ता की सिद्धि को दिये गये तर्कों की समीक्षा करें

या

ईश्वर के संबंध में विभिन्न विचारों या प्रमाणों की विवेचना करें ?

उत्तर - चूँकि गैलवे तथा फ्लिंट आदि के अनुसार स्वयं से परे सत्ता अथवा सत्ताओं पर मानव का विश्वास ही धर्म है, जो उसकी भावनात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है तथा जिस आस्था को मनुष्य अपनी पूजा श्रद्धा के रूप में व्यक्त करता है, अधिकांश धर्मों में वह परम सत्ता जो मनुष्य से परे है, ईश्वर कहा माना गया है, जिसमें विश्वास व्यक्त करना ही धर्म माना जाता है।

इसी सत्ता से संबंधित विचार धर्म दर्शन में ईश्वरवाद कहा जाता है। ईश्वरवाद व्यापक अर्थ में निमित्तेश्वरवाद, सर्वेश्वरवाद, अनेकेश्वरवाद, एकेश्वरवाद, निमित्तेश्वरवाद आदि ईश्वर संबंधी विचारों को आत्मसात करता है।

एकेश्वरवाद के अनुसार ईश्वर एक है वह संसार का एक मात्र कारण है। वह सर्वशक्तिमान, दयालु, ज्ञान एवं ऐश्वर्य से परिपूर्ण सत्ता है। विश्व उसका परिणाम है।

अनेकेश्वरवाद के अनुसार बहुत सारे देव है या देवतागण है, जो प्रकृति में घटित होने वाली विभिन्न घटनाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये देवतागण ही इन घटनाओं के कारण है। अनेकेश्वरवाद का उदाहरण वेदों में मिलता है। कुल मिलाकर जगत के मूलकारण के रूप में जहाँ अनेक देवताओं को स्वीकारा जाता है वहाँ ईश्वर सीमित हो जाता है।

केवलनिमित्तेश्वरवाद अथवा निमित्तेश्वरवाद के अनुसार ईश्वर जगत का केवल निमित्त कारण है, उपादान कारण नहीं। अर्थात ईश्वर जगत का निर्माता है, निर्माण सामग्री वह

Scanned with CamScanner

स्वयं नहीं है। इसका उदाहरण इस्लाम धर्म है, जहाँ ईश्वर कीचड़ से या फिर शून्य से संसार की सृष्टि करता है।

सर्वेश्वरवाद के अनुसार ईश्वर संसार में अंतर्यामी (अर्थात् कण-कण में) है तथा परगामी (संसार से परे) है तथा व्यावहारिक दृष्टि से संसार में कण-कण में व्याप्त है। यह विचार स्पीनोजा के ईश्वर विचार से मिलता है।

निमित्तेश्वरवाद के अनुसार ईश्वर संसार का निमित्त कारण भी है तथा उपादान कारण भी है। अर्थात् संसार का निर्माता भी है, और स्वयं निर्माण सामग्री भी है। सारा संसार उसका शरीर है तथा स्वयं इस संसार रूपी शरीर की अंतर्यामी आत्मा भी। सृष्टि का अर्थ है कि ईश्वर अपने शरीर का विस्तार संसार के रूप में करता है। तथा प्रलय का अर्थ है संसार के बीज रूप में अपने में समेट लेना अतः वह संसार का निर्माता भी है तथा निर्माण सामग्री भी है। यह विचार रामानुज के दर्शन में मिलता है। उपनिषद का ईश्वर भी निमित्त-उपादान कारण ही है। यह श्रेष्ठतम ईश्वरवादी सिद्धान्त है।

ईश्वर के अस्तित्व के लिए प्रमाण

प्रश्न उठता है कि क्या ईश्वर के अस्तित्व को तर्क बुद्धि द्वारा प्रमाणित किया जा सकता है। ईश्वरवादियों ने ईश्वर की सत्ता को सिद्ध करने के लिए मूल रूप में चार प्रमाण देने का प्रयास करते है, जो तर्क बुद्धि पर आधारित है।

(1) तात्विक प्रमाण - तात्विक प्रमाण के समर्थक संत एन्सलम और डेकार्ट है। संत एन्सलम के अनुसार ईश्वर प्रत्यय एक पूर्ण सत्ता का प्रत्यय है और पूर्ण सत्ता के प्रत्यय में अस्तित्व जैसी विशेषता होनी ही चाहिए। अतः ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध होता है।

Scanned with CamScanner

यहाँ पर रसेल कहते हैं कि अतिरिक्त कोई गुण या विशेषता नहीं है जो एक पूर्ण सत्ता के प्रत्यय में अनिवार्य रूप से हो। फिर हमारे मन में यदि ईश्वर प्रत्यय या पूर्ण सत्ता का प्रत्यय है, तो इससे किसी सत्ता को प्रमाणित नहीं किया जा सकता। कांट के अनुसार यदि हमारे प्रत्यय का विचार आता है कि मेरी जेब में स्वर्ण है तो इससे मेरी जेब में सोना या स्वर्ण नहीं हो जाता है। इस प्रकार तात्विक प्रमाण ईश्वर की सत्ता को सिद्ध नहीं कर पाता।

(ii) प्रयोजनमूलक प्रमाण – इसमें ईश्वरवादी संसार को ईश्वर का प्रयोजन मानते हैं। ईश्वर अपने विशेष प्रयोजन से इस संसार की रचना करता है। यह संसार ईश्वर का प्रयोजन ही प्रतीत होता है। समय पर सूर्य का उगना, समय से डूबना, बरसात में बारिश का होना, जगत में नियमितता को सिद्ध करते हैं, यह नियमितता जगत को किसी पूर्ण सत्ता का प्रयोजन सिद्ध करता है। वह सत्ता ईश्वर है।

इस प्रमाण के विरुद्ध यह तर्क दिया जाता है कि प्रयोजन साधारण मनुष्यों का हो सकता है, ईश्वर का नहीं, क्योंकि उसका भी प्रयोजन होगा तो वह मनुष्य के समान सीमित हो जायेगा। अतः यह प्रमाण भी ईश्वर को सिद्ध करने में असफल है।

(iii) कारणता मूलक प्रमाण :- यहां विश्व को कारण-कार्य श्रृंखला के रूप में स्वीकार किया जाता है, तथा अंतिम कारण के रूप में ईश्वर को स्वीकार कर श्रृंखला का अंत मान लिया जाता है।

कुछ ईश्वरवादी इसे इस रूप में भी सिद्ध करने का प्रयास करते हैं कि सभी घटनाओं का एक कारण

Scanned with CamScanner

होता है अतः विश्व का भी कोई कारण है

इस मत के विरोध में यह कहा जाता है कि जिस प्रकार संख्या की श्रृंखला का अन्त नहीं माना जाता है उसी प्रकार कारण-कार्य श्रृंखला का भी अंत क्यों माना जाय यह तर्क रसेल का है। फिर घटनाओं का कारण हो सकता है, पर विश्व कोई घटना नहीं वरन घटनाओं का समूह है अतः इसका कारण भी हो, और वह ईश्वर ही हो, यह आवश्यक नहीं है।

(iv) नैतिकता पर आधारित प्रमाण :— ईश्वरवादी नैतिकता का आधार ईश्वर को मान कर उसे प्रमाणित करने का प्रयास करते हैं। परन्तु मानवतावादी धर्म, नैतिक मूल्यों की उत्पत्ति मानव में ही मानते हैं।

कांट मूल्यों, विशेष कर नैतिक मूल्यों को स्वीकार करने के लिए ईश्वर की सत्ता को स्वीकारना आवश्यक मानते हैं।

परन्तु जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म जो मूल्य प्रधान धर्म हैं, अहिंसा, सत्य, अस्तेय आदि जैसे मूल्यों को स्वीकार करने के लिए ईश्वर की सत्ता को अनिवार्य नहीं मानते। कांट ने भी नैतिक मूल्यों के सिद्धि के लिए ईश्वर को स्वीकार कर गलती की है। साधारणतः ईश्वर की सिद्धि के लिए नैतिक मूल्यों की सहायता ली जाती है, जो अतार्किक प्रतीत होता है।

इस प्रकार कोई भी प्रमाण ईश्वर की सत्ता स्थापित नहीं कर पाते हैं। वास्तव में तर्क से ईश्वर को न तो सिद्ध किया जा सकता है और नहीं असिद्ध। ईश्वर आस्था का विषय है। श्रद्धा एवं आस्था धर्म के आधार हैं, और मूलतः ईश्वर धर्म का आधार है। अतः इसे तर्क बुद्धि द्वारा प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

अब प्रश्न उठता है कि ईश्वर को सिद्ध करने के प्रमाण अनुपयोगी हैं। ऐसा कहना भी तर्कसंगत नहीं है। क्योंकि ये युक्तियाँ कम से कम ईश्वर की संभावना को अवश्य

Scanned with CamScanner

प्रत्यक्ष प्रमाणित करते हैं। ये युक्तियाँ कम से कम यह प्रमाणित करती हैं कि मानव में ईश्वर विचार किस प्रकार विकसित हुए हैं।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि ईश्वर आस्था एवं श्रद्धा का विषय है। ईश्वर का अस्तित्व पूर्वमान्यता के आधार पर स्वीकार करना, इसलिए आवश्यक हो जाता है कि यह धर्म का आधार है, और धर्म नैतिकता तथा नैतिक मूल्यों का मूल स्रोत है। अतः उपयोगिता के आधार पर ईश्वर को स्वीकारा जा सकता है।

पुनः ईश्वर को सत्य करने हेतु तर्क पर आधारित प्रमाण वह सिद्ध अवश्य करते हैं कि मनुष्य के मन में ईश्वर विचार का प्रत्यय विकसित होते हैं अतः ये प्रमाण भी अनुपयोगी नहीं हैं।

Dr. Saroj Ram
Dept. of Philosophy
D.K. College, Dumraon